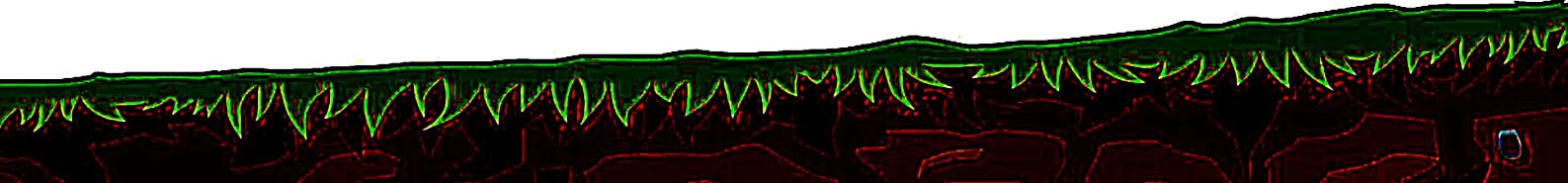


ब्रह्म ज्ञान योग संस्थान

विस्वाँ सीतापुर



सतनाम लिया तो डरना क्या !

भवसागर और काल का डर क्या,

यम के फाँस में फँसना क्या !

चौरासी के दुख से छूटो,

बंधन किसी में बंधना क्या !!

तीन ताप का असर न व्यापै,

मानस रोग में पड़ना क्या !

काग गमन गति तुरत ही बदले,

कुमति, कुबुद्धि में पड़ना क्या !!

जीव परिधि से केन्द्र को आवै,

मन और सुरत में फंसना क्या !

सत्यनाम जब मिला जीव को,

ओम नाम में फंसना क्या !!

परमात्म जब तुम्हें मिल गया,

देवलोक में फंसना क्या !

सद्गुरु खोजि, सतनाम को खोजो,

सन्मुख मन तो लखना क्या !!

सतनाम लिया तो जपना क्या!

चौथे लोक सतनाम विराजे,

तीन लोक में फँसना क्या !

तीन लोक में नाम रहति हैं,

नाम रूप में फँसना क्या !!

नाम रूप तो माया के हैं,

माया में फिर फँसना क्या !

माया में तुम फँसे पड़े हो,

फिर माया को जपना क्या !!

ध्यान, भजन सब माया के हैं,
जीव को इनमें फँसना क्या !

नाम खोजते गली-गली तुम,
माया फाँस में फँसना क्या !!

क्रिया, कर्म सद्गुरु नहिं देते,
इनमें ही फिर पड़ना क्या !

सत्यनाम को सद्गुरु देते,
कोटिनाम फिर जपना क्या !!

ध्यान, ज्ञान, विज्ञान

अद्वितीय, सदवस्तु का,

ज्ञान, विज्ञान अपरोक्ष !

अध्ययन तीन प्रकार से,

करना केवल बोध !!

शास्त्र ज्ञान ही ज्ञान है,

ध्यान, भजन विज्ञान !

आत्म ज्ञान अपरोक्ष है,

केवल अपरोक्ष को ज्ञान !!

अध्ययन तीन प्रकार से,

बाहर, अंदर, अपरोक्ष !

जान, ध्यान है ब्रह्म का,

आत्म है अपरोक्ष !!

अंदर, बाहर है नहीं,

न करता स्पर्श !

अपरोक्ष से जानो आत्मा,

गुरु से करो विमर्श !!

गति अंदर की तरफ़ हो,

ध्यान, भजन है जान !

शून्य हो गति मन, सुरत की,

एक, अचल सतनाम !!

अंदर, बाहर गति नहीं,

पूर्ण अचल सतनाम !

लोक, देह कोई नहीं,

वही एक सतनाम !!

नाम रूप जड़ प्रकृति है,

चेतन है सतनाम !

धार रूप है परमपद,

उसे कहें सतनाम !!

सत्यनाम की प्रकृति सब,

नाद, प्रकाश और भाव !

भूख सभी की तृप्त हो,

जीव, सुरत, मन गाय !!

प्राप्त सभी प्रातःव्य हो,

जात सभी जातव्य !

तीन लोक बस जीव के,

जीव बने सर्वज्ञ !!

बनो प्रकाशक जगत के,

मायाधीश और पूर्ण !

सदवस्तु सद्गुरु मिले,

सभी अपूर्ण हो पूर्ण !!

“ स्वयं घटित ” वह जान

चार प्रकार के भक्त हैं,

चौथा इनमें श्रेष्ठ !

ज्ञान, ध्यान और योग के,

“ स्वयं भजे ” वह श्रेष्ठ !!

जिनका संचालन वह करे,

वही हैं उसके मान !

मन संचालित भक्त जो,

उन्हें अन्य ही जान !!

करै सदा उनकी रखवाली,

जिमि बालक पालइ महतारी !!

प्रभु में ही स्थित सदा,

यही समर्पण होय !

जान समाधि भी यही है,

सहज समाधि भी होय !!

भगवतगीता घटित कहं,

वह जानों स्थान !

सभी योग वहाँ घटित हैं,

स्वयं - स्वयं ही मान !!

अखण्ड समाधि भी वही है,

अखण्ड आत्मा जान !

जहाँ स्वयं ही घटित सब,

उसको तू पहिचान !!

करना नहिं अद्वैत में,

स्वयं घटित वह होय !

पूरी गीता शास्त्र सब,

घटित वहीं पर होय !!

नित्य युक्त वह भक्त है,

वही अनन्य है जान !

पर्मेश्वर की आत्मा,

उसी भक्त को मान !!

" अद्वैत "

जीव फँसे वह द्वैत है,

क्रिया कर्म भी द्वैत !

ध्यान भजन सब द्वैत हैं,

स्वयं घटित अद्वैत !!

क्रिया, कर्म गति, खण्ड हो,

मन और सुरत हैं अद्वैत !

करना जिसमें कुछ नहीं,

स्वयं घटित अद्वैत !!

सत्य, अनामी, परमपद,

सत्यनाम अद्वैत !

आत्म, परमात्म वही,

परमधार अद्वैत !!

सार सभी का एक है,

मूल सभी का एक !

सन्मुख होना एक के,

लखना जीव को एक !!

अद्वैत से ही है सब बना,

अद्वैत ही है सतनाम !

अद्वैत जीव का लक्ष्य है,

जानो तुम सतनाम !!

शास्त्र ज्ञान ही ज्ञान है,

अन्दर को गति ध्यान !

ध्यान, भजन, विज्ञान है,

अपरोक्ष, अद्वैत को जान !!

संचालित जो अन्य से,

जानों उसको द्वैत !

संचालित हो स्वयं से,

स्वयं घटित अद्वैत !!

स्वयं घटित है, मूल है,

धार रूप है सार !

ज्ञान, विज्ञान, प्रज्ञान सब,

तीनों पद है असार !!

कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग,

क्रियायोग है द्वैत !

लक्ष्य न इनसे प्राप्त हो,

खोजो तुम अद्वैत !!

सुरेशाद्याल

ब्रह्मज्ञान योग संस्थान मौचकला

विस्वाँ सीतापुर (उ० प्र०)

सम्पर्क सूत्र - 9984257903